

Premchand
Aatmaram
Chapter 1
DV

बेदों ग्राम में महादेव सोनार सुविख्यात आदमी था । वह अपने सायबान में प्रातः से संध्या तक अँगीठी के सामने बैठा हुआ खट्-खट् किया करता था। यह लगातार ध्वनि सुनने के लोग इतने अभ्यस्त हो गये कि जब किसी कारण से वह बन्द हो जाती, तो जान पड़ता था कोई चीज गायब हो गयी है। वह नित्यप्रति क बार प्रातःकाल अपने तोते का पिंजड़ा लि , कोई भजन गाता हुआ तालाब की ओर जाता था। उस धुंधले प्रकाश में उसका जर्जर शरीर, पोपला मुँह और झुकी हुई कमर देख कर किसी अपरिचित मनुष्य को उसके पिशाच होने का भ्रम हो सकता था। ज्यों ही लोगों के कानों में आवाज़ आती-‘सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता’ लोग समझ जाते कि भोर हो गया।

महादेव का परिवारिक जीवन सुखमय न था ।उसके तीन पुत्र थे, और तीन बहूँ थीं, दर्जनों नाती पोते थे ; लेकिन उसके बोझ को हल्का करने वाला कोई न था। लड़के कहते-जब तक दादा जीते हैं, हम जीवन का आनन्द भोग लें, फिर तो ढोल गले में पड़ेगा ही। बेचारे महादेव को कभी-कभी निराहार ही रहना पड़ता। भोजन के समय उसके घर में साम्यवाद काेसा गगन भेदी

निर्घोष होता कि वह भूखा ही उठ जाता, और नारियल का हुक्का पीता हुआ सो जाता । उसका व्यावसायिक जीवन और अशांति कारक था। यद्यपि वह अपने काम में निपुण था, उसका खटाई औरों से कहीं ज्यादा शुद्धिकारक और उसकी रासायनिक क्रियाँ कहीं ज्यादा कष्टसाध्य थीं तथापि उसे आये दिन

शक्की और धैर्य-शून्य प्राणियों के अपशब्द सुनने पड़ते थे। पर महादेव अविचलित गाम्भीर्य से सिर झुकाये सब कुछ सुना करता। ज्यों ही कलह शांत होता, वह अपने तोते की ओर देखकर पुकार उठता 'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता'। इस मंत्र के जपते ही उसके चित्त को पूर्ण शांति प्राप्त हो जाती थी।

क दिन संयोग से किसी लड़के ने पिंजड़े का द्वार खोल दिया। तोता उड़ गया। महादेव ने सिर उठाकर जो पिंजड़े की ओर देखा, तो उसका कलेजा सन्न से हो गया। तोता कहाँ गया। उसने फिर पिंजड़े को देखा, तोता गायब था। महादेव घबरा कर उठा और इधर-उधर खपरैलों पर निगाह दौड़ाने लगा। उसे संसार में कोई वस्तु अगर प्यारी थी, तो वह यही तोता। लड़के-बालों, नाती-पोतों से उसका जी भर गया था। लड़कों की चुलबुल से उसके काम में विघ्न पड़ता था। बेटों से उसे प्रेम न था; इस लिये नहीं कि वे निकम्मे थे, बल्कि इसलिये कि उनके कारण वह अपने आनन्दमयी कुल्हड़ों की नियमित संख्या से वंचित रह जाता था। पड़ोसियों से उसे चिढ़ थी, इसलिये कि वह उसकी अँगीठी से आग निकाल कर ले जाते थे। इन समस्त विघ्न बाधाओं से उसके लिये कोई पनाह थी, तो वह यही तोता। इससे उसे किसी प्रकार का कष्ट न होता था। वह अब उस अवस्था में था जब मनुष्यों को शांति-भोग के सिवा और कोई इच्छा नहीं रहती।

तोता क खपरैल पर बैठा था। महादेव ने पिंजड़ा उतार लिया, और उसे दिखा कर कहने लगा- 'आ आ' सत्त गुरुदत्त दाता।' लेकिन गाँव और घर के लड़के कत्र होकर चिल्लाने और तालियाँ बजाने लगे। ऊपर से कौवों ने काँव-काँव की रट लगायी। तोता उड़ा और गाँव के बाहर निकल कर क पेड़ पर जा बैठा। महादेव खाली पिंजड़ा लिये उसके पीछे दौड़ा, सो दौड़ा। लोगों को उसकी द्रुतगामिता पर अचम्भा हो रहा था। मोह की इससे सुन्दर इससे सजीव, इससे भावमय कल्पना नहीं की जा सकती।

दोपहर हो गयी; किसान लोग खेतों से चले आ रहे थे। उन्हें विनोद का अच्छा अवसर मिला। महादेव को चिढ़ाने में सभी को मजा आता था। किसी ने कंकड़ फेंके, किसी ने तालियाँ बजायीं; तोता फिर उड़ा और वहाँ से दूर आम के बाग के क पेड़ की फुनगी पर

जा बैठा। महादेव फिर खाली पिंजड़ा लि, मेढ़क की भाँति उचका चला। बाग में पहुँचा तो पैर के तलुओं से आग निकल रही थी ; सिर चक्कर खा रहा था। जब जरा सावधान हुआ तो फिर पिंजड़ा उठाकर कहने

लगा- 'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता।' तोता फुनगी से उतर कर नीचे की क डाल पर आ बैठा ; किन्तु महादेव की ओर सशंक नेत्रों से ताक रहा था । महादेव ने समझा डर रहा है। वह पिंजड़े को छोड़कर आप क दूसरे पेड़ की आड़ में छिप गया । तोते ने चारों ओर गौर से देखा। निःशंक हो गया, उतरा और आकर पिंजड़े के ऊपर बैठ गया। महादेव का हृदय उछलने लगा। 'सत्त गुरु दत्त दाता' का मन्त्र जपता हुआ, धीरे-धीरे तोते के समीप आया, और लपका कि तोते को पकड़ ले ; किन्तु तोता हाथ न आया, फिर पेड़ पर जा बैठा।

शाम तक यही हाल रहा। तोता कभी इस डाल पर जाता, कभी उस डाल पर । कभी पिंजड़े पर आ बैठता, कभी पिंजड़े के द्वार पर बैठ अपने दाने-पानी की प्यालियों को देखता और फिर उड़ जाता। बुढ़ा अगर मूर्तिमान मोह था, तो तोता मूर्तिमयी माया। यहाँ तक शाम हो गयी। माया और मोह का यह संग्राम अँधकार में विलीन हो गया ।

रात हो गयी। चारों ओर निविड अंधकार छा गया। तोता न जाने पत्तों में कहाँ छिपा बैठा था। महादेव जानता था कि रात को तोता कहीं उड़कर नहीं जा सकता, और न पिंजड़े ही में आ

सकता है, फिर भी वह उस जगह से हिलने का नाम न लेता था। आज उसने दिन भर कुछ नहीं खाया, रात के भोजन का समय भी निकल गया, पानी की क बूँद भी उसके कंठ में न गयी ; लेकिन उसे न भूख थी, न प्यास । तोते के बिना उसे अपना जीवन निस्सार शुष्क और सूना जान पड़ता। वह दिन-रात काम करता था, इसलि कि यह उसकी अंतःप्रेरणा थी, जीवन के और काम इसलि करता था कि

आदत थी। इन कामों में उसे अपनी सजीवता का लेश मात्र भी ज्ञान न होता था। तोता ही वह वस्तु थी, जो उसे चेतना की याद दिलाती थी। उसका हाथ से जाना जीव का देह-त्याग करना था।

महादेव दिन भर का भूखा-प्यासा, थका-माँदा रह-रह कर झपकियाँ ले लेता था ; किन्तु क क्षण में फिर चौंक कर आँखें खोल देता, और उस विस्तृत अँधकार में उसकी आवाज सुनाई देती - 'सत्त गुरु दत्त शिवदत्त दाता।'

आधी रात गुजर रही थी। सहसा वही कोई आहट पाकर चौंका। देखा, क-दूसरे वृक्ष के नीचे क धुँधला दीपक जल रहा है, और कई आदमी बैठे हु आपस में कुछ बातें कर रहे हैं। वे सब चिलम पी रहे थे। तमाखू की महक ने उसे अधीर कर दिया, उच्च स्वर में बोला- 'सत्त गुरु दत्त शिवदत्त दाता' और उन आदमियों की ओर चिलम पीने चला, किन्तु जिस प्रकार बन्दूक की आवाज सुनते ही हिरन भाग जाते हैं, उसी प्रकार उसे आते देख वे सबके सब उठ कर भागे। कोई इधर गया कोई उधर। महादेव चिल्लाने लगा—ठहरो-ठहरो ! काक उसे ध्यान आ गया, ये सब चोर हैं। वह जोर से चिल्ला उठा- 'चोर-चोर' पकड़ो पकड़ो ! चोरों ने पीछे फिरकर भी न देखा।

महादेव दीपक के पास गया तो उसे क कलसा रखा हुआ मिला। मोरचे से काला हो रहा था। महादेव का हृदय उछलने लगा। उसने कलसे में हाथ डाला, तो मोहरें थीं। उसने क मोहर

बाहर निकाली और दीपक के उजाले में देखा हाँ मोहर थी। उसने तुरन्त कलसा उठा लिया, और दीपक बुझा दिया और पेड़ के नीचे से छिप कर बैठा रहा। साह से चोर बन गया।

उसे फिर शंका हुई, 'सा न हो चोर लौट कर आयें, और मुझे अकेला देखकर मोहरें छीन लें।' उसने कुछ मोहरें कमर में बाँधीं, फिर क सूखी लकड़ी से जमीन की मिट्टी हटाकर की गड़ढ़े बनाये, उन्हें मोहरों से भर कर मिट्टी से ढक दिया।

महादेव के अंतर्नेत्रों के सामने अब क दूसरा ही जगत था -चिंताओं और कल्पनाओं से

परिपूर्ण । यद्यपि अभी कोष के हाथ से निकल जाने का भय था, पर अभिलाषाओं ने अपना काम शुरू कर दिया । क पक्का मकान बन गया, सराफे की क भारी दुकान खुल गयी, निज संबंधियों से फिर नाता जुड़ गया, विलास सामग्रियाँ कत्र हो गयीं । तब तीर्थयात्रा करने चले और वहाँ से लौटकर बड़े समारोह से यज्ञ, ब्रह्म-भोज हुआ । इसके पश्चात् क शिवालय और कुँआ बन गया और वहाँ वह नित्यप्रति कथा-पुराण सुनने लगा । साधु-सन्तों का आदर सत्कार होने लगा ।

अकस्मात् उसे ध्यान आया, कहीं चोर आ जायें तो मैं भागूँगा क्यों कर ? उसने परीक्षा करने के लिये कलसा उठाया, और दो सौ पग तक बेतहाशा भागता हुआ चला गया ।

जान पड़ता था, उसके पैरों में पर लग गये हैं, चिंता शांत हो गयी । कल्पनाओं में रात व्यतीत हो गयी । उषा का आगमन हुआ, हवा जगी, चिड़ियाँ गाने लगीं । सहसा महादेव के कानों में आवाज आयी : सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता,

राम के चरन में चित्त लागा ।

यह बोल महादेव की जिह्वा पर रहता था । दिन में सहस्रों बार ये शब्द उसके मुख से निकलते थे, पर उसका धार्मिक भाव कभी उसके अंतःकरण को स्पर्श न करता था । जैसे कि बाजे से राग निकलता है उसी प्रकार उसके मुँह से वह निकलता था, निर्र्थक और प्रभाव शून्य । तब उसका हृदय-रूपी वृक्ष पत्र पल्लव से विहीन था । यह निर्मल वायु उसे गुंजारित न कर सकती थी । पर अब उस वृक्ष में कोपलें और शाखाँ निकल आयी थीं, इस वायु प्रवाह से झूम उठा, गुंजित हो गया ।

अरुणोदय का समय था । प्रकृति का क अनुरागमय प्रकाश में डूबी हुई थी । उसी समय तोता परों को जोड़े हु ऊँची डाली से उतरा, जैसे आकाश से कोई तारा टूटे और आकर पिंजड़े में बैठ गया । महादेव प्रफुल्लित हो दौड़ा, पिंजड़े उठाकर बोला- आओ आत्माराम, तुमने कष्ट तो बहुत दिया,

पर मेरा

जीवन भी सफल कर दिया । अब तुम्हें चाँदी के पिंजड़े में रखूँगा, और सोने से मढ़ दूँगा । उसके रोम-रोम से परमात्मा के गुणानुवाद की ध्वनि निकलने लगी- प्रभु, तुम कितने

दयावान हो ! यह

तुम्हारा असीम वात्सल्य है, नहीं तो मुझ जैसा पापी प्राणी कब इस कृपा के योग्य था ? इन पवित्र भावों से उसकी आत्मा विह्वल हो गई । वह अनुरक्त होकर कह उठा- सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता,

राम के चरन में चित्त लागा ।

उसने क हाथ में पिंजड़ा लटकाया, बगल में कलसा दबाया और घर चला ।

महादेव घर पहुँचा तो अभी कुछ अँधेरा था । रास्ते में क कुत्ते के सिवा और किसी से भेंट न हुई, और कुत्ते को मोहरों से विशेष प्रेम नहीं होता । उसने कलसे को क नाँद में छिपा दिया और उसे कोयले से अच्छी तरह ढाँक कर अपनी कोठरी में रख आया । जब दिन निकल आया, तो वह सीधे पुरोहित जी के घर पहुँचा । पुरोहित जी पूजा पर बैठे सोच रहे थे -कल ही मुकदमें की पेशी है, और अभी तक हाथ में कौड़ी भी नहीं।-जजमानों में कोई साँस भी नहीं लेता । इतने में महादेव ने पालागन की । पंडित जी ने मुँह फेर लिया । यह अमंगल मूर्ति कहाँ से आ पहुँची । मालूम नहीं दाना भी मयस्सर होगा या नहीं । रूष्ट होकर पूछा- क्या है जी, क्या कहते हो ? जानते नहीं, हम इस समय पूजा पर रहते

हैं ? महादेव ने कहा-महाराज, आज मेरे यहाँ सत्यनारायण की कथा है ।

पुरोहित जी विस्मित हो गये । कानों पर विश्वास न हुआ । महादेव के घर कथा का होना उतनी ही असाधारण घटना थी, जितनी अपने घर से किसी भिखारी के लि भीख निकालना । पूछा--आज क्या है ?

महादेव बोला -कुछ नहीं ,से ही इच्छा हुई कि आज भगवान की कथा सुन लूँ ।

प्रभात से ही तैयारी होने लगी । वेदों और अन्य निकटवर्ती गाँव में सुपारी फिरी । कथा के

उपरान्त भोज का भी नेवता था। जो सुनता आश्चर्य करता-यह आज रेत के दूब कैसे जमीं !

संध्या के समय जब सब लोग जमा हो ग, पंडितजी सिहांसन पर विराजमान हु, तो महादेव खड़ा होकर उच्च स्वर में बोला- 'भाइयों, मेरी सारी उम्र छल-कपट में कट गयी।' मैंने न जाने कितने आदमियों को दगा दी, कितना खरे का खोटा किया, पर अब भगवान ने मुझ पर दया की है, वह मेरे मुँह की कालिख मिटाना चाहते हैं। मैं आप सभी भाइयों से ललकार कर कहता हूँ कि जिसका मेरे जिम्मे जो कुछ निकलता हो, जिसकी जमा मैंने मार ली हो, जिसके चोखे माल को खोटा कर दिया हो, वह आकर अपनी क-क कौड़ी चुका ले। अगर कोई यहाँ न आ सका हो, तो आप लोग

उससे जाकर कह दीजि, कल से क महीने तक जब भी जी चाहे आये, और अपना हिसाब चुकता कर ले। गवाही-साखी का काम नहीं।

सब लोग सन्नाटे में आ ग। कोई मार्मिक भाव से सिर हिला कर बोला- हम कहते न थे !

किसी ने अविश्वास से कहा-क्या खाकर भरेगा, हजारों का टोटल हो जागा !

क ठाकुर ने ठठोली की - और जो सुरधाम चले गये ?

महादेव ने उत्तर दिया - उनके घर वाले तो होंगे ?

किन्तु इस समय लोगों को वसूली की इतनी इच्छा न थी, जितनी यह जानने की कि इसे

इतना धन मिल कहाँ से गया ? किसी को महादेव के पास आने का साहस न हुआ। देहात के आदमी थे, गड़े मुर्दे को उखाड़ना क्या जानें। फिर प्रायः लोगों को याद भी न था कि उन्हें महादेव से क्या पाना है, और से पवित्र अवसर पर भूल-चूक हो जाने का भय उनका मुँह बन्द कि हु था। सबसे बड़ी बात यह थी कि महादेव की साधुता ने उन्हें वशीभूत कर लिया था।

अचानक पुरोहित जी बोले--तुम्हें याद है, मैंने क कंठा बनाने के लि सोना दिया था, और तुमने कई माशे तौल में उड़ा दि थे।

महादेव -हाँ, याद है। आपका कितना नुकसान हुआ होगा ?

पुरोहित - पचास रुपये से कम न होगा।

महादेव ने कमर से दो मोहरें निकालीं, और पुरोहित जी के सामने रख दीं। पुरोहित की

लोलुपता पर टीकाँ होने लगीं-यह बेइमानी है, बहुत होगा दो चार रुपये का नुकसान हुआ होगा। बेचारे से पचास रुपये ठ लि। नारायण का भी डर नहीं। बनने को पंडित,पर नीयत 'सी खराब ! राम ! राम !

लोगों को महादेव पर क श्रद्धा-सी हो गयी। क घंटा बीत गया ; पर उन सहस्रों मनुष्यों में क भी खड़ा न हुआ। तब महादेव ने फिर कहा- मालूम होता है आप लोग अपना-अपना हिसाब भूल ग हैं। इसलि आज कथा होने दीजि, मैं क महीने तक आपकी राह देखूँगा। इसके पीछे तीर्थ-यात्रा करने चला जाऊँगा। आप सब भाइयों से मेरी बिनती है कि आप मेरा उद्धार करें।

क महीना तक महादेव लेनदारों की राह देखता रहा। रात को चोरों के भय से नींद न आती। अब वह कोई काम न करता। शराब का चसका भी छूटा। साधु-अभ्यागत जो द्वार पर आ जाते, उनका यथायोग्य सत्कार करता। दूर-दूर उसका सुयश फैल गया । यहाँ तक कि क महीना पूरा हो गया और क आदमी भी हिसाब लेने न आया। अब महादेव को ज्ञात हुआ कि संसार में कितना धर्म, कितना सदव्यवहार है ! अब उसे मालूम हुआ कि संसार बुरों के लि बुरा है, और अच्छों के लि अच्छा।

इस घटना को हु पचास वर्ष बीत चुके हैं। आप बेदों जाइ तो दूर ही से क सुनहरा कलस दिखायी देता है। यह ठाकुर द्वारे का कलस है। उससे मिला हुआ क पक्का तालाब है, जिसमें खूब कमल खिले हैं। उसकी मछलियाँ कोई नहीं पकड़ता। तालाब के किनारे क विशाल समाधि है। यही आत्माराम का स्मृति चिन्ह हैं उनके सम्बन्ध में विभिन्न किंवदंतियाँ

प्रचलित हैं। कोई कहता है रत्न जटित पिंजड़ा स्वर्ग को चला गया। कोई कहता है कि उस पक्षी-रूपी चंद्र को किसी बिल्ली रूपी-राहु ने ग्रस लिया। लोग कहते हैं, आधीरात को अभी तक तालाब के किनारे आवाज आती है :

सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता,
राम के चरन में चित्त लागा।

महादेव के विषय में भी कितने ही जन-श्रुतियाँ हैं। उनमें सबसे मान्य यह है कि आत्माराम के समाधिस्थ होने के बाद वह कई सन्यासियों के साथ हिमालय चला गया, और वहाँ से लौट कर न आया। उसका नाम आत्माराम प्रसिद्ध हो गया।